आईआईटी बीएचयू के कर्मचारियों ने भी किए आविष्कार

वाराणसी | निज संवाददाता

आईआईटी बीएचयू के वर्कशॉप में शुक्रवार को नॉन टीचिंग कर्मचारियों के अविष्कारों की प्रदर्शनी सजी। प्रतिभागियों ने सिद्ध कर दिया कि प्रतिभा को न तो किसी विशेष डिग्री की जरूरत है और न ही उम्र की। विचार कभी भी कौंध सकते हैं। जरूरत है थोड़ी कल्पनाशीलता की और उसे पूरा करने के जज्बे की।

आईआईटी बीएचयू के लैब में मशीनों की देखभाल करने वाले कर्मचारियों ने कई ऐसे अविष्कार किए हैं जो जन सामान्य के लिए उपयोगी व कम लागत में तैयार हो जाएंगे। उद्घाटन आईआइटी के पूर्व निदेशक प्रो. एसएन उपाध्याय, डीरेका के उप मुख्य यांत्रिक अभियंता जितेन्द्र अग्रवाल और भारतीय हैवी इलेक्ट्रिकल लिमिटेड के मुख्य प्रबंधक टीएस मुरली ने दीप जलाकर किया।

आईआईटी बीएचयू में नॉन टीचिंग कर्मचारियों के अविष्कारों की प्रदर्शनी में अपनी बनाई हुई आटा चक्की मशीन के साथ मुख्य वर्कशाप टेक्नीशियन करुण विश्वकर्मा।

मिनी आटा चक्की बनाएगी सेहत

आईआईटी बीएचयू के मुख्य वर्कशॉप के टेक्नीशियन करुण विश्वकर्मा ने थ्री इन वन आटा चक्की बनायी है। कम बिजली की खपत वाली यह मशीन महज .25 हार्स पावर की है। इस आटा चक्की का उपयोग तीन कामों में किया जा सकता है। इसे पैडल से साइकिल की तरह भी चलाया जा सकता है। आटा पीसने के अलावा अनाज से कंकड अलग करने के लिए विशेष प्रकार की चलनी भी लगी है। इसे स्टैंड बाइसिकिल के रूप में चलाकर सेहत भी बनाई जा सकती है। 15 हजार में तैयार चक्की न सिर्फ आटे की पोषकता बरकरार रखती है बल्कि इसका उपयोग आयुर्वेदिक औषधियों का चूर्ण बनाने में भी किया जाता है क्योंकि इसमें पीसने पर औषधि का तापमान ज्यादा नहीं बढ़ता।

अपने बनाए कूलर के साथ सीनियर टेक्नीशियन बनारसी रॉव।

कैन से मिनी कूलर

प्लास्टिक कैन से सीनियर टेक्नीशियन बनारसी रॉव ने बैटरी से चलने वाला कूलर बनाया है। 12 वोल्ट की बैटरी से करीब आठ घंटे चलने वाला ये पोर्टेबल कूलर हजार रुपये में तैयार किया जा सकता है। यह सामान्य कमरे को ठंडा करने में सक्षम है। इसमें लगे विंडो से दो दिशा में ठंडी हवा भी दी जा सकती है।

प्रदर्शनी में फसलों की कटाई करने वाली मशीन के साथ तकनीशियन श्रीकुमार।

पैडी राइस एंड वीट कटर

किसानों के लिए उपयोगी व तेजी से फसलों की कटाई करने वाली मशीन का इजाद तकनीशियन श्रीकुमार ने किया। छोटे खेतों में जहां हार्वेस्टर ले जाना संभव नहीं वहां इस मशीन से कटाई की जा सकती है। करीब 10 हजार रुपये की लागत से तैयार मशीन चलाने में बिजली अथवा पेट्रोल डीजल की जरूरत नहीं। इसे धकेल कर फसल की कटाई की जा सकती है। हसिया से कटाई करने में लगने वाले समय व मजदूरों की कमी को यह मशीन पूरी कर देगी। इस मशीन से किसान कमरतोड़ मेहनत से बचते हुए तेजी से कटाई कर सकते हैं।

इंग्रोइंग कॉपी मशीन के साथ मुख्य वर्कशाप के तकनीशियन अजय कुमार।

इंग्रोइंग कॉपी मशीन

आईआईटी मकैनिकल इंजीनीयरिंग के मुख्य वर्कशॉप के तकनीशियन अजय कुमार यादव ने इंग्रोइंग कॉपी मशीन का अविष्कार किया है। यह मशीन किसी भी डिजाइन की कॉपी करने में सक्षम है। इसमें लगे ड्रील से कागज, लकड़ी, प्लाटिक व किसी भी धातु को आसानी से काटा जा सकता है। डिस्प्ले बोर्ड पर एक डिजाइन रखकर उसपर मशीन में लगी सुई घुमाने से दूसरे सिरे पर रखे धातु को उसी डिजाइन में काटना संभव है। अजय की इस मशीन से बीटेक की पढ़ाई में उपयोग होने वाली प्लेट बनाई जाती है। इसका उपयोग बढ़ई व लोहार भी विभिन्न डिजाइन बनाने में कर सकते हैं।